Nai Dunia (Indore), 2nd September 2020, Page-8

स्वागतयोग्य है विज्ञान व गणित को संस्कृत भाषा में पढ़ाने की आइआइटी की पहल

मेरा प्रदेश

प्रमोद भार्गव

देश के शीर्ष अभियांत्रिकी संस्थानों में आमतौर पर गणित और विज्ञान की पढ़ाई अंग्रेजी में होती है, लेकिन अब उस कक्षा की कल्पना कीजिए, जिसमें तकनीकी विषयों के प्राचीन पाठ संस्कृत में पढ़ाए जाएंगे। साथ ही शिक्षक और विद्यार्थी इसी भाषा में संवाद संप्रेषित करेंगे। यह सुखद एवं उल्लेखनीय पहल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर ने की है। संस्थान ने देश के प्राचीन ग्रंथों में शताब्दियों पहले संजोए गए गणितीय और वैज्ञानिक ज्ञान से वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराने के लिए अपने किस्म का ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू किया है, जिसमें प्रतिभागियों को संस्कृत में पढ़ाया जा रहा है। 62 घंटों का यह पाठ्यक्रम 2 अक्टूबर 2020 तक चलेगा। पहले भाग में संस्कृत भारती संगठन के भाषाई विद्वानों की मदद से उन प्रतिभागियों में संस्कृत समझने को लेकर कौशल विकसित किया जाएगा, जो इस पुरातन भाषा से अच्छी तरह परिचित नहीं हैं। पाठ्यक्रम के दूसरे भाग में आईआईटी मुंबई के दो प्रोफेसर संस्कृत में गणित का शास्त्रीय पाठ पढ़ाएंगे। इसमें 750 से अधिक प्रतिभागी भाग लेंगे।

वस्तुत: संस्कृत में रचे गए भारत के प्राचीन ग्रंथों में गणित और विज्ञान के ज्ञान की समृद्ध विरासत है, लेकिन वर्तमान पीढ़ी के ज्यादातर लोग ज्ञान के इस सुनहरे अतीत से अनभिज्ञ हैं। अब तक यह माना जाता रहा है कि संस्कृत भाषा के ग्रंथों में गणित व विज्ञान नहीं है। दरअसल, स्वतंत्रता के बाद से ही भारत अपनी इस विरासत का लाभ नहीं उठा पाया। आजादी के बाद यह उम्मीद जगी थी कि संस्कृत के ग्रंथों में निहित ज्ञान पर अनुसंधान करके उन्हें मनुष्य के लिए उपयोगी

बनाया जाएगा। किंतु तथाकथित वामपंथियों के धर्मनिरपेक्षतावादी इकतरफा विचारों के चलते संस्कृत के ग्रंथों को ही नहीं, भाषा को भी सांप्रदायिक भाषा मान लिया गया। देश की शैक्षिक संस्थाओं में वामपंथी विद्वानों का वर्चस्व इसमें बाधा बना रहा। पाश्चात्य मत से प्रभावित इस धारा के लोग बीते छह-सात दशक तक यही सिद्ध करने की पुरजोर कोशिश में लगे रहे कि भारत के पास गणित और विज्ञान के ज्ञान की कोई विरासत नहीं है और विदेशी आक्रांताओं ने भारत को ज्ञान और सभ्यता से परिचित कराया। दरअसल, ये विद्वान निजी स्वार्थ और पदलोलुपता के चलते देश के जातीय एवं भाषाई स्वाभिमान को आघात पहुंचाने वाली मैकाले की शिक्षा पद्धति को ही सींचते रहे। जबकि मैकाले ने भारतीय ज्ञान की जड़ों में मट्ठा डालने का काम किया था। अलबत्ता अनेक विदेशी विद्वानों ने संस्कृत को एकमात्र जीवित भाषा माना है। यदि यह भाषा जीवित न होती तो मैकाले इसे नष्ट करने के कानूनी उपाय क्यों करता? जर्मन विद्वान मैक्समूलर करीब पौने दो सौ साल पहले संस्कृत के ग्रंथों की हजारों पांडुलिपियां अपने देश क्यों ले गया होता? हालांकि मैक्समूलर द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवादों से पाश्चात्य विद्वानों ने इसकी वैज्ञानिक महिमा को जाना व महत्ता को स्वीकार किया। इसीलिए नासा के वैज्ञानिक आज संस्कृत को दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा मान रहे हैं और इसे वैज्ञानिकों के लिए अनिवार्य भाषा बनाए जाने की मांग भी कर रहे हैं। संस्कृत को कंप्यूटर की कृत्रिम बुद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। नासा के वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि संस्कृत विश्व की सबसे अधिक स्पष्ट भाषा है। इसे जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि इसका शब्दकोष बहुत विशाल है। इसमें 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्द हैं। नासा के पास ताड़-पत्रों पर लिखी संस्कृत की साठ हजार पांडुलिपियां उपलब्ध हैं। इन पर व्यापक शोध चल रहा है। संस्कृत ही ऐसी भाषा है, जिसमें कम से कम शब्दों में वाक्य पूरे हो जाते हैं।

यह गौरव की बात है कि अब हमारे प्रदेश के इंदौर में स्थित आइआइटी ने इस दिशा में कदम बढ़ाया है कि नई पीढ़ी को संस्कृत के वैभव से परिचित करवाया जाए।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)